National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 08-08-2025, Accepted: 07-09-2025, Published: 22-09-2025
Volume 10, Issue 3, 2025, Page No. 86-88

"डॉ॰ सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन तथा उसकी उपयोगिता"

अंशु[1], डॉ0 रविन्द्र कुमार त्यागी[2]

[1] शोधकर्ती, शिक्षाशास्त्रए श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोध निर्देशक (भिक्षाशास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध में डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी से सम्बन्धित विचार तथा उसकी उपयोगिता को प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन एवं डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के शिक्षार्थी के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन करना है।

वर्तमान अध्ययन डॉ॰ सम्पूर्णानन्द जी के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी के सम्बन्धित विचारों को सुव्यवस्थित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि को चुना गया। प्रस्तुत अध्ययन में डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों तथा डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का प्रयोग किया गया।

पाठ्यक्रम का सम्बन्ध प्रत्येक विषय से होना चाहिए और वह किसी न किसी कौशल से जिसका वातावारण में एक महत्वपूर्ण स्थान है, सम्बन्धित है। पाठ्यक्रम पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित नहीं होना चाहिए। पाठ्य पुस्तक या पुस्तिका अध्ययन का पाठ्यक्रम शासन के निर्देशन या सहमति के अनुसार होना चाहिए।

शिक्षार्थी को अपने गुणों पर शिक्षा का विशेष ध्यान होना चाहिए क्योंकि उन्ही गुणों के सदुपयोग से वह शिक्षा को आत्मसात् कर पाता है। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने कहा कि छात्रों की अपनी योग्यता के अनुसार शिक्षा ही नहीं उन्हें भावी जीवन के लिए भी तैयार किया जाना चाहिए।

मूल शब्दः डॉ॰ सम्पूर्णानन्द, पाठ्यक्रम, शिक्षार्थी

परिचय

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। और यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा होता है तो उसे उठने–बैठने, चलने–फिरने, खाने– पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखाई जाने लगती हैं। जब वह तीन– चार वर्ष का होता है तो उसे पढ़ना–लिखना सिखाने लगते हैं। इसी आयु पर उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय में उसकी शिक्षा बड़े सुनियोजित ढंग से चलती है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता रहता है और सीखने–सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी चलता रहता है और जीवन भर चलता है। और विस्तृत रूप में देखें तो किसी समाज में शिक्षा की यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। अपने वास्तविक अर्थ में किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सीखाने की यह सप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है।

शिक्षा जड़ नहीं अपितु एक चेतन तथा स्वेच्छित द्विमुखी प्रक्रिया है। इस दृश्टि से शिक्षा के लिए दो व्यक्तियों का होना परम आव यक है– एक शिक्षक और दूसरा बालक। शिक्षक के कुछ आद र्ा, मूल्य तथा वि वास होते हैं और बालक इन सबसे प्रभावित होता है। दूसरे भाब्दों में, शिक्षक एक दार्शनिक है जो अपने दर्शन के अनुसार बालक के जीवन के विभिन्न पक्षों को विकसित करके वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। इस प्रकार शिक्षा एक प्रत्यक्ष साधन है जिसके द्वारा द र्ान के निर्धारित किये गये लक्ष्यों को प्राप्त किया जाता है। एडमस ने ठीक ही लिखा है–"शिक्षा दर्शन का क्रियाशील पक्ष है। यही दार्शनिक चिन्तन का एक सक्रिय पहलू है।"

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

सम्बन्धित साहित्य का अर्थ

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। बिना साहित्य के अध्ययन के अनुसंधानकर्ता सही दिशा में एक भी कदम नहीं बढ़ा सकता है। डब्ल्यू0 आर0 बोज के शब्दों में– ''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है। जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को ग्रहण नहीं कर लेते, तब तक हमारे कार्य की प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की संभावना रहती है अथवा ये पुनरावृत्त भी हो सकते हैं।'' शोधकर्ती ने विषय को चयनित करने के बाद विषय से सम्बन्धित जानकारी हेतु गाँधी जी से सम्बन्धित पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन किया है।

भट्ट, जे0 एम0 (1973) के भाोध प्रबन्ध का उद्देश्य विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन का उनके जीवन के सन्दर्भ में अध्ययन करना था। विनोबा के दर्शन के अनुसार जीवन के लिये शिक्षा आज एक प्रक्रिया नहीं बल्कि एक उद्देश्य के साथ प्रक्रिया है। शिक्षा में आत्म परिचय, पाठ्यक्रम में जीवन तथा परिश्रम का महत्व बताया जाना आव यक है। आध्यात्मिकता को शिक्षक द्वारा शिक्षा में बल दिया जाना चाहिये। विनोबा भावे ने एक सर्वोदयावदी के रूप में, एक व्यक्ति के रूप में सामाजिक प्राणी के विकास की प्रेरणा दी और व्यक्ति को समाज के विकास का आधार मानते हुए व्यक्ति और समूह के विकास में एक रि ता कायम करने का प्रयास किया। विनोबा का द र्ान छात्रों को निर्भयता, अहिंसा, भाान्ति तथा लोकतंत्र के आदर्शों का पाठ सिखाना चाहता है। विनोबा के दर्शन की तुलना गाँधी के दर्शन से करने पर यह निश्कर्श निकाला गया कि दोनों दार्शनिकों के विचार जीवन के अन्तिम लच्य का सम्बन्ध लगभग समान ही है। लेकिन गाँधी जी के दर्शन स्वतंत्रता के राजनैतिक उद्देश्य से बंधा हुआ था जबकि विनोबा पुनः सामाजिक निर्माण के विशय में अधिक चिन्तित थे।

सिंह, प्रवीण कुमार (2007) ने अपने शोधप्रबंध "भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों के योगदान का तुलनात्मक अध्ययन" में समाजवादी चिन्तकों के जीवन दर्शन, शिक्षा दर्शन तथा समाज एवं संस्कृति का अध्ययन किया। इसमें उन्होंने पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, नारी शिक्षा, साक्षरता अभियान, विज्ञान, तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा, अनुशासन आदि विषयों पर अध्ययन किया तथा सुझाव दिये।

डॉ0 सरोज कुमरा वर्मा (1991) ने आचार्य रजनी ा के दा ार्निक विचार : एक समीक्षात्मक अध्ययन विशय को लेकर पी0एच–डी0 की उपाधि प्राप्त की है। इसमें उन्होंने आचार्य रजनीश द्वारा धर्म, आत्मा, परमात्मा, जगत, शिक्षा, समाज, नीति, प्रेम, मोक्ष, योग, ध्यान आदि के सन्दर्भ में उनके विचारों की व्याख्या की। भाोधकर्ता के केन्द्र विशय दा ार्निक अवधारणा रहे हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी के सम्बन्ध में विचार वर्तमान में शिक्षा जगत में एक नवीन प्रकाश की किरणे बिखेर सकते हैं क्योंकि वर्तमान शिक्षा जगत को जिन लक्ष्यों और आदर्शों की अधिक आवश्यकता है। वे सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी से सम्बन्धित विचारों में निहित हैं। इसी कारण से शोधकर्ती ने "डॉ॰ सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन तथा उसकी उपयोगिता" नामक विषय शोध अध्ययन हेतु चुना है। अतः शोधकर्त्री अपने शोध के माध्यम से सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी सम्बन्धी विचारों को जानने का प्रयास किया, ताकि उनके विचारों का अध्ययन कर वर्तमान समय में इनकी उपयोगिता देखकर इनको अपनाया जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

1. डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन करना।
2. डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के शिक्षार्थी के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन करना।

अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तित्व

डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी

डा0 सम्पूर्णानन्द जी का जन्म पौश शुक्ल एकादशी, बुद्धवार संवत् 1846 में अर्थात 1 जनवरी सन्–1890 ई. को एक प्रतिष्ठित कायस्थ कुल में उत्तर भारत के जालपा देवी, काशी (वाराणसी), उत्तर प्रदेश में हुआ था। डा. सम्पूर्णानन्द जी के पूर्वज बख्शी सदानन्द काशी–प्रांत के दीवान थे। काशी के वर्तमान प्रांत के वास्तविक संस्थापक महाराज बलवंत सिंह बड़े वीर, परिश्रमी तथा कुशल शासक थे।

डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी एक महान दार्शनिक, राजनीतिज्ञ तथा नवचेतना के मूर्तिमान युगपुरुष थे। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी भारतीय इतिहास की उन गिनी चुनी महान विभूतियों में से हैं जो राष्ट्र को एक नवीन दिशा की ओर ले जाते हैं। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ऐसे चिन्तक थे जिन्होंने ऐसे आधारभूत सिद्धान्त प्रस्तुत किये जिनमें मानव जाति के परम लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। उन्होंने मानव जीवन के अनेकों आदर्शों एवं पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य बताये। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने शिक्षा पद्धति के माध्यम से आत्म–सम्मान एवं स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाया।

शोध सीमांकन

प्रस्तुत शोध में डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी से सम्बन्धित विचार तथा उसकी उपयोगिता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया। यह शोध अध्ययन डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी द्वारा प्रस्तुत पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी के सम्बन्धित विचारों तक ही सीमित रहा।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

वर्तमान अध्ययन डॉ॰ सम्पूर्णानन्द जी के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी के सम्बन्धित विचारों को सुव्यवस्थित किया गया। शोध अध्ययन में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि को चुना गया।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों का तथा डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का प्रयोग किया गया।

"डॉ॰ सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी के सम्बन्ध में विचार तथा उसकी उपयोगिता

शिक्षा के दर्शन की वास्तविक कसौटी तो पाठ्यक्रम होता है। इस सम्बन्ध में डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के विचार विशेष रूप से अनुशीलन करने योग्य है–

पाठ्यक्रम जो सिर्फ पुस्तकों तक ही सीमित है। माध्यमिक पाठ्यक्रम तय्यार करते समय प्रत्येक तथ्य की ओर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम में लिंग सम्बन्धी एवं उसका ज्ञानोपार्जन किया जाए। पाठ्य–पुस्तकें निरन्तर रहती हैं परन्तु इसके पीछे शिक्षण की भावना महत्वपूर्ण है। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने कहा कि पाठ्यक्रम का सम्बन्ध प्रत्येक विषय से होना चाहिए और वह किसी न किसी कौशल से जिसका वातावारण में एक महत्वपूर्ण स्थान है, सम्बन्धित है। पाठ्यक्रम पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित नहीं होना चाहिए। बड़े अधिनायकों ने भी व्यवस्थित पाठ्यक्रम नहीं बनाया।

डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने कहा कि चार वर्षीय सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को कुछ वैकल्पिक विषयों के प्रभावशाली ढंग से पढाने का लक्ष्य रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि पाठ्य पुस्तक या पुस्तिका अध्ययन का पाठ्यक्रम शासन के निर्देशन या सहमति के अनुसार होना चाहिए। हम उन छात्रों को अपनाते हैं जो विज्ञान के पाठ्यक्रम को अपनाते हैं जो कि दृष्टि विषयक को देखते हैं परन्तु जिन्हें भारतीय इतिहास और संस्कृति के साधारण तथ्यों तक का भी कोई व्यावहारिक ज्ञान नहीं होता है। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने अन्य विषयों के पाठ्यक्रम के साथ कृषि को उनका अंग बनाने की प्रस्तुति की है। पाठ्यक्रम ऐसा हो कि शिष्य अपने सम्पूर्ण वातावरण मनुष्यकृत और प्राकृतिक दोनों पर दृष्टिपात कर सकें।

शिक्षार्थी को अपने गुणों पर शिक्षा का विशेष ध्यान होना चाहिए क्योंकि उन्ही गुणों के सद्उपयोग से वह शिक्षा को आत्मसात् कर पाता है। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने कहा कि छात्रों की अपनी योग्यता के अनुसार शिक्षा ही नहीं उन्हें भावी जीवन के लिए भी तैयार किया जाना चाहिए। शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का विश्लेषण करने के बाद उसके अभिभावकों को निर्देशन और परामर्श हेतु सूचना मिलनी चाहिए ताकि शिक्षार्थी को उपयुक्त एंव पर्याप्त प्रेरक अभिभावकों द्वारा भी प्राप्त हो। चरित्रवान, राष्ट्र प्रेमी, आत्मनिर्भर, जातिवाद से उपर, समाज सेवी शिक्षार्थी की कल्पना डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने की है। वह चाहते थे कि अन्य बातों के साथ साथ छात्र किसी एक व्यवसाय को अपनाने में और जीवन यापन करने में सक्षम हों। उन्होंने कहा कि छात्र की आत्मा के अस्तित्व को महत्व दिया जाना चाहिए। इस प्रकार ही शिक्षार्थी का सम्पूर्ण व्यक्तित्व पुष्पित हो सकेगा। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने कहा कि शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो जाने से छात्र कम समय में अधिक ज्ञान इक्ट्ठा कर सकेगें। ग्रामीण और शहरी दोनों ही

छात्रों को वह महत्व देते थे। उन्होंने कहा कि शिक्षा का माध्यम यदि मातृभाषा होगा तो शिक्षार्थी की दृष्टि से सर्वाधिक उपयोगी होगा। शिक्षार्थी के वैज्ञानिक स्तर के साथ साथ सांस्कृतिक स्तर को भी उठाया जाना चाहिए। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी शिक्षार्थियों को राजनीति में भाग लेने से रोकते है यह शिक्षा और शिक्षण संस्थाओं की पवित्रता के लिए आवश्यक है।

डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के उपरोक्त सार पूर्ण वक्तव्यों का मनन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि जब छात्रों को शिक्षित किया जा रहा होता है उस समय ही वास्तव में राष्ट्र का भविष्य वर्गीकरण विधि निश्चय ही छात्रों के तथा राष्ट्र के हित में होगी तथा कि शिक्षकों की इस विधि को क्रियान्वित करना चाहिए। ऐसा डॉ0 सम्पूर्णानन्द अपना मत प्रकट करते है। महात्मा गांधी की तरह डॉ0 सम्पूर्णानन्द ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग करने की सलाह देते है। यह भी उल्लेखनीय है कि शिक्षार्थियों को विभिन्न विधाओं में शिक्षित करने के साथ–साथ डॉ0 सम्पूर्णानन्द कहते है कि शिक्षार्थी उनका अपना है यह सुख तभी बढ़ता जब अभिभावकों को भी इस क्रिया में भागीदार बनाया जाए। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने तीन मुख्य बिन्दुओं की ओर हमारा ध्यान दिलाया है कि शिक्षार्थी अन्य चारित्रिक व सामाजिक गुणो के साथ साथ शिक्षा की सहायता से जीवनयापन करने में सक्षम हो तथा यह अनुभव करता हो कि वह आत्मा है। एक और जहां वह शिक्षा में कृषि को महत्व देते हैं तो दूसरी और वह चाहते है। कि गांव और शहरी शिक्षा में कोई अन्तर न हो। कोठारी कमीशन ने उनके मातृभाषा के सम्बंध में दिए गए वक्तव्य को सात वर्ष वाद माना कि ज्ञान प्रसारित करने का सर्वोत्तम माध्यम मातृभाषा ही है। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी का इस सम्बंध में भी स्पष्ट मत है कि शिक्षार्थी केवल अपनी शिक्षा पर ही ध्यान दें। इसके लिए उन्हें राजनीति से अपने को अलग रखना होंगा। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी पाठ्यक्रम के सम्बंध में भी बहुत स्पष्ट मत रखते थे कि पाठ्यक्रम राष्ट्रीयता, भारतीय संस्कृति, यौन शिक्षा, कृषि शिक्षा को अपना विशिष्ट बिन्दु बनाए। यह भी उल्लेखनीय है कि यदि शिक्षा की नीति में शासन की अनुमति होगी तो उन नीतियों को क्रियान्वित करने में कठिनाई न होंगी माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम और विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रम को चर्चा करने के पश्चात् डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी यह नहीं भूलें हैं कि शिक्षा में विज्ञान का विशेष महत्व है किन्तु विश्वविद्यालय स्तर पर ललित कलाओं का अध्ययन बहुत महत्व रखता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी केवल सैद्धान्तिक दृष्टिकोण ही नहीं रखते थे व्यावहारिक पक्ष भी उनका सबल था और इस प्रकार शिक्षा में उनकी गहरी पैठ थी।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी सम्बन्धी विचारों का अध्ययन के समान अन्य शिक्षाशास्त्रियों के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी सम्बन्धी विचारों का अध्ययन किया जा सकता हैं। डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी सम्बन्धी विचारों का अन्य शिक्षाशास्त्रियों के पाठ्यक्रम एवं शिक्षार्थी सम्बन्धी विचारों से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।

1. सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची
2. प्रसाद, वैधनाथ– विश्व के महान शिक्षा शास्त्री
3. डॉ॰ सम्पूर्णानन्द– थाट्स ऑफ एजूकेशनल एण्ड सम एलाइड प्राब्लम्स् (लेख– यूनिवर्सिटी ऑटोनामी एण्ड एजूकेशन रिफोर्म) जनवरी 1959.
4. डॉ॰ सम्पूर्णानन्द– थाट्स ऑफ एजूकेशनल एण्ड सम एलाइड प्राब्लम्स् (लेख– एन इम्पोर्टेंट क्वेशचन) जनवरी 1959.
5. ए0एस0 अल्तेकर– प्राचीन भारत में शिक्षा, पटना वि0वि0, किशोर ब्रदर्स, वाराणसी.
6. डॉ० दुबे, रमाकान्त– विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री (मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली)
7. मिश्र, आत्मानन्द (1972)– भारतीय शिक्षा के प्रर्वतक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
8. एम॰बी॰ बुच (1988–92)– फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वाल्यूम–2.
9. डॉ0 सरोज कुमार वर्मा (1991)– आचार्य रजनीश के दार्शनिक विचार पी0 एच–डी0 एजूकेशन।